कक्षा- आठवीं

पाठ -13

माँ

(डॉ० मीनाक्षी वर्मा)

सप्रसंग व्याख्या

1. ईश्वर का वरदान ----------संस्कार है।

प्रसंग -- प्रस्तुत पद्यांश डॉ० मीनाक्षी वर्मा द्वारा रचित 'माँ' शीर्षक कविता में से लिया गया है। इसमें कवयित्री ने माँ को ईश्वर का वरदान माना है।

सरलार्थ :- कवयित्री कहती है कि माँ ईश्वर का अनुपम वरदान है। यह सभी रिश्तों में सबसे महान है। माँ जब जीवन की शिक्षा देती है तो किताब बन जाती है। उसकी कथनी में शिष्टाचार झलकता है तथा उसकी करनी में संस्कार होता है।

2. जब हर क्षण ----------रात है।

प्रसंग :-प्रस्तुत पद्यांश डॉ० मीनाक्षी वर्मा द्वारा रचित 'माँ' शीर्षक कविता में से लिया गया है। इसमें कवयित्री ने माँ की महिमा का गुणगान किया है।

सरलार्थ :- कवयित्री कहती है कि जब माँ हर क्षण का अहसास कराती है। तब वह समय बन जाती है। उसके जाग जाने में ही सवेरा होता है और उसके सो जाने से ही रात हो जाती है अर्थात मानों माँ से ही दिन रात चलते हैं ।

3. जब हर विपदा ----------उसमें अपार है।

प्रसंग :-प्रस्तुत पद्यांश डॉ० मीनाक्षी वर्मा द्वारा रचित 'माँ' शीर्षक कविता में से लिया गया है। इसमें कवयित्री ने माँ के साहसी रूप का वर्णन किया है।

सरलार्थ :- कवयित्री कहती है कि जब माँ बच्चे के जीवन की प्रत्येक विपत्ति को हरा देती है तब वह हिमालय के समान महान बन जाती है। वह अपनी हिम्मत को अपना शस्त्र बना लेती है। उसमें अपार ऊर्जा एवं शक्ति है।

4. जब ममता का----------उसका सदाचार है।

प्रसंग :-प्रस्तुत पद्यांश डॉ० मीनाक्षी वर्मा द्वारा रचित 'माँ' शीर्षक कविता में से लिया गया है। इसमें कवयित्री ने माँ की ममता और उसके त्याग की व्याख्या की है।

सरलार्थ :- कवयित्री कहती है कि जब माँ अपनी ममता का प्रकाश चारों तरफ फैला देती है तब माँ दीपक की जलने वाली बत्ती बन जाती है। वह अपने बच्चों का दुःख लेकर उन्हें सुख देती है अर्थात दूसरों को सुख देना ही माँ का सदाचार है।

5. जब खुशी के ----------जय-जयकार है ।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश डॉ० मीनाक्षी वर्मा द्वारा रचित 'माँ' शीर्षक कविता में से लिया गया है। इसमें कवयित्री ने माँ की दुआओं के प्रभाव पर प्रकाश डाला है।

सरलार्थ :- कवयित्री कहती है कि जब माँ की आँखों में प्रसन्नता के आँसू बहते है तो उत्सव के समान लगता है। चारों तरफ खुशी छा जाती है। जब माँ किसी को दुआएँ देती है तो उसका यश चारों ओर फैल जाता है अर्थात माँ के आशीर्वाद में चमत्कार होता है। उसके प्रोत्साहन से जय-जयकार होती है।

6. जब खुद कम ----------उसका स्वभाव है।

प्रसंग:- प्रस्तुत पद्यांश डॉ० मीनाक्षी वर्मा द्वारा रचित 'माँ' शीर्षक कविता में से लिया गया है। इसमें कवयित्री ने माँ के वात्सल्य रूप का वर्णन किया है।

सरलार्थ :- कवयित्री कहती है कि जब माँ स्वयं कम खाकर अपने बच्चों को भरपेट खिलाती है तो वह गौरैया बन जाती है। उसमें स्नेह की भावना भरपूर होती है। माँ का स्वभाव ही समर्पण है अर्थात वह वात्सल्य और त्याग से सदा दूसरों के प्रति समर्पित रहती है

7. जब आगे बढ़ने ----------उपहार है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश डॉ० मीनाक्षी वर्मा द्वारा रचित 'माँ' शीर्षक कविता में से लिया गया है । इसमें कवयित्री ने माँ के सहनशील रूप का वर्णन किया है।

सरलार्थ :- कवयित्री कहती है कि जब माँ अपने बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने का गीत सुनाती है तब वह नदी बन जाती है। मर्यादा में रहना माँ का व्यवहार है अर्थात माँ सदा मर्यादाओं में रहती है। सहनशीलता उसका उपहार है।

8. जब निःस्वार्थ---------- स्वर्गद्वार है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश डॉ० मीनाक्षी वर्मा द्वारा रचित 'माँ' शीर्षक कविता में से लिया गया है। इसमें कवयित्री ने माँ के निःस्वार्थ भाव की महिमा का गुणगान किया है

सरलार्थ :- कवयित्री कहती है कि जब माँ बिना किसी स्वार्थ के सेवा करती है तो सभी में सेवा की भावना जागृत होती है। तब माँ धरती बन जाती है। जिस प्रकार धरती का विस्तार केवल दूसरों को देने में है उसी प्रकार माँ सदा ही सबको वात्सल्य प्रेम देती है। माँ के चरणों में ही स्वर्ग का द्वार मिलता है।

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिए गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :--**

ਈਸ਼ਵਰ	=	ईश्वर	ਊਰਜਾ	=	ऊर्जा
ਮਾਂ	=	माँ	ਚਮਤਕਾਰ	=	चमत्कार
ਹਥਿਆਰ	=	हथियार	ਨਦੀ	=	नदी

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिए गये हैं | इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਸਮਾਂ	=	समय	ਹੌਂਸਲਾ	=	साहस
ਸਵੇਰ	=	प्रभात	ਬੱਤੀ	=	बाती
ਮੁਸੀਬਤ	=	विपदा	ਸੁਭਾਅ	=	स्वभाव

3. शब्दार्थ :-

कथनी	=	कही हुई बात ,कथन
शिष्टाचार	=	शिष्टतापूर्ण आचरण एवं व्यवहार
संस्कार	=	व्यवस्थित करना ,सजाना
विपदा	=	संकट
बाती	=	दीपक की बत्ती
मर्यादित	=	प्रतिष्ठित
सहनशीलता	=	सहनशील होना
निःस्वार्थ	=	बिना किसी स्वार्थ के
उत्सव	=	मंगल कार्य

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें --

(क) माँ किसका वरदान है?

उत्तर- माँ ईश्वर का वरदान है|

(ख) माँ समय के रूप में क्या करती है?

उत्तर - माँ समय के रूप में हर क्षण का अहसास कराती है|

(ग) हर विपदा को हराने पर माँ को क्या कहा गया है?

उत्तर - हर विपदा को हराने पर माँ को हिमालय कहा गया है|

(घ) माँ का हथियार क्या है?

उत्तर - माँ का हथियार साहस है|

(ङ) माँ बाती के रूप में क्या करती है?

उत्तर - माँ बाती के रूप में ममता का प्रकाश फैलाती है|

(च) खुशी के आँसू बहाने पर माँ को क्या कहा गया है?

उत्तर - खुशी के आँसू बहाने पर माँ को उत्सव कहा गया है|

(छ) माँ गौरैया कब बन जाती है?

उत्तर - जब माँ खुद कम खाकर बच्चों को ज़्यादा खिलाती है तब माँ गौरैया बन जाती है|

(ज) आगे बढ़ने का गीत सुनाने पर माँ को क्या पुकारा गया है ?

उत्तर - आगे बढ़ने का गीत सुनाने पर माँ को नदी पुकारा गया है|

(झ) इस कविता में माँ का उपहार क्या बताया गया है?

उत्तर - इस कविता में माँ का उपहार सहनशीलता को बताया गया है|

(ञ) माँ के चरणों में किसका द्वार है?

उत्तर - माँ के चरणों में स्वर्ग का द्वार है|

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें --

(क) इस कविता में माँ की कथनी और करनी में किसके दर्शन होते हैं?

उत्तर - इस कविता में माँ की कथनी में शिष्टाचार और करनी में संस्कार के दर्शन होते हैं | माँ जो कहती है उसको पूरा करती है | वह सब सुखों की आधार है, उसके चरणों में स्वर्ग का द्वार दिखाई देता है|

(ख) दुःख और सुख में माँ की क्या भूमिका है?

उत्तर - माँ अपने बच्चों के दुःख को अपने ऊपर ले लेती है। वह दूसरों को दुःखी नहीं देख सकती। वह सब सुखों की आधार है। माँ दूसरों के सुख को ही अपना सुख मानती है। अतः वह दूसरों के दुःख में दुःखी और दूसरों के सुख में सुखी होती है।

{ग) माँ की दुआओं और प्रोत्साहन से क्या होता है?

उत्तर - माँ की दुआओं से चमत्कार तथा प्रोत्साहन से जय-जयकार होती है| माँ की दुआएँ किसी चमत्कार से कम नहीं होतीं| इसका प्रोत्साहन मिलते ही सर्वत्र जय जयकार हो जाती है| जीवन के सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं|

(घ) धरती के रूप में माँ क्या करती है?

उत्तर - धरती के रूप में माँ निःस्वार्थ भावना से सेवा करती है| वह सबका कल्याण करती है| सबको समान भाव से देखती है| धरती ही सबको जीवन देती है|

6. पर्यायवाची शब्द लिखें --

ईश्वर	=	प्रभु, परमात्मा
प्रभात	=	सुबह, सवेरा
रात	=	रात्रि, निशा
नदी	=	तरणि, तटिनी
चरण	=	पैर, पाँव
धरती	=	धरा, पृथ्वी
किताब	=	पुस्तक, पोथी ।

7. विपरीत शब्द लिखें --

वरदान	=	अभिशाप	विस्तार	=	संक्षेप
जीवन	=	मरण	सदाचार	=	दुराचार
स्वीकार	=	अस्वीकार	जय	=	पराजय
प्रेम	=	विरह			

8. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें --

जिसका पार न हो	=	अपार
किसी का उत्साह बढ़ाना	=	उत्साहवर्धन
बिना स्वार्थ के	=	निःस्वार्थ
माँ का बच्चे के प्रति प्यार	=	वात्सल्य
अच्छा व्यवहार	=	सद्व्यवहार

9. निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों को शुद्ध करके लिखें :-

शिश्टाचार	=	शिष्टाचार	पड़ाती	=	पढ़ाती
कीताब	=	किताब	हीमालय	=	हिमालय
सविकार	=	स्वीकार	चमतकार	=	चमत्कार
आँसु	=	आँसू	सुभाव	=	स्वभाव
विवहार	=	व्यवहार	वातसलय	=	वात्सल्य

शिक्षा विभाग, पंजाब

(मार्गदर्शक : डॉ. सुनील बहल, सहायक निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. पंजाब)

तैयार कर्त्री :
मीनू शर्मा
हिंदी अध्यापिका
स.सी.सै. स्मार्ट स्कूल तिब्बड़
गुरदासपुर

संयोजक :
इंद्रजीत शर्मा
हिंदी अध्यापक
स.मि.स्कूल सिधवां
गुरदासपुर

संशोधन :
परमजीत सिंह
हिंदी अध्यापक
स.मि.स्कूल तिवड़ी
गुरदासपुर